GOVERNMENT RESOLUTION
The Budget (Railways), 2007-08
and
Approving Recommendations Contained in Fifth Report of the Railway Convention Committee (2004)-*Contd.*

श्रीमती सुषमा स्वराज (मध्य प्रदेश): उपसभापति महोदय, वैसे तो रेल बजट पर चर्चा कल मुकम्मल हो जानी थी, लेकिन मैंने आपसे पांच मिनट का समय लिया था। मेरा रेल बजट पर बोलने का इरादा बिल्कुल नहीं था। हमने अपनी पार्टी की ओर से अन्य वक्ता तय किए थे। हमारे साथी श्री वेंकैया नायडु जी ने चर्चा की शुरूआत की थी तथा बाकी साथियों ने भी पार्टी का पक्ष रखा था। महोदय, परसों मेरी डाक में एक पत्र आया, जिसने मुझे बोलने के लिए प्रेरित किया है। यह पत्र किसी अपरिचित व्यक्ति का है और वह मुझे नहीं जानता है। यह पत्र एक नोट की शक्ल में है। हो सकता है कि उन्होंने बाकी सांसदों को भी यह पत्र भेजा हो। इस पत्र के पहले पैराग्राफ में यह लिखा है, 'मुझे 27, 28 जनवरी, 2007 को मुम्बई से नई दिल्ली तक 'स्वर्ण मंदिर एक्सप्रैस' से यात्रा करते समय तत्काल आरक्षण का जो अनुभव हुआ, इससे लालू प्रसाद जी के रेल मंत्रालय के बढ़ते मुनाफे का राज तो खुल ही गया, साथ ही तत्काल आरक्षण के अंतर्गत यात्रा करने वालों की दुर्दशा से भी पर्दा उठा है।'

महोदय, मुझे इस पत्र से एक सूत्र मिला है और बार-बार जो यह बात कही जा रही है कि रेल मंत्रालय ने बिना आम आदमी पर बोझ डाले 20 हजार करोड़ का मुनाफा कमाया है। मुझे याद है, राष्ट्रपति अभिभाषण के दौरान बोलते हुए प्रो॰ राम देव भंडारी जी ने इसे करिश्मा कहा था। उन्होंने कहा था कि बिना आम आदमी पर बोझ डाले, रेल मंत्रालय ने 20 हजार करोड़ रुपए का मुनाफा कमाया है, यह एक करिश्मा है। लेकिन जब मैंने यह शब्द 'मुनाफे का राज' पढ़ा तो मुझे एक सूत्र मिला कि जरूर इस मुनाफे का कोई राज होगा और मैं उस राज को खोजने में लग गई। उस राज के माध्यम से जो तथ्य मेरे सामने आए, मैं उनको आपके माध्यम से रेल मंत्री जी के सामने तथा इस सदन के सामने रखना चाहती हूं। अगर यह सच है तो वह राज इस करिश्मे की कलई खोलता है। महोदय, रेलवे में एक तत्काल आरक्षण का कोटा होता है। पहले कुछ ट्रेन्स में यह कोटा 10 फीसदी था, यानी टोटल ट्रेन के टिकटों का जो 10 फीसदी था, वह टिकटें तत्काल कोटे के तहत बिकती थीं। इस तत्काल कोटे में एक व्यक्ति को निम्न श्रेणी के लिए 50 रुपए प्रति टिकट ज्यादा देना पड़ता था और उच्च श्रेणी के लिए 100 रुपए प्रति टिकट ज्यादा देने पड़ते थे। लालू जी ने उस तत्काल आरक्षण के कोटे को हर ट्रेन में 30 फीसदी कर दिया तथा 50 रुपए को बढ़ाकर 100 रुपए कर दिया और 100 रुपए को बढ़ाकर 300 रुपए कर दिया। अब मैं इसका प्रभाव बताती हूं। जब 10 परसेंट कोटा था, तो 90 परसेंट टिकटें, उन ट्रेन्स की जिनमें तत्काल

कोटा होता था, सामान्य किराए पर मिलती थीं, लेकिन अब हर ट्रेन की 70 फीसदी टिकटें सामान्य किराए पर बेचे जाने के बाद काउंटर क्लोज कर दिया जाता है तथा 30 परसेंट टिकटें तत्काल कोटे के तहत बिकती हैं। पहले तत्काल कोटा 24 घंटे पहले ही शुरू होता था, क्योंकि 10 परसेंट कोटा था तो पांच दिन पहले तत्काल कोटा शुरू हो जाता है। यानी जब सत्तर परसेंट टिकटें बिक गईं तो पांच दिन पहले तत्काल कोटा शुरू हो जाता है। उसमें आपको प्रति टिकट डेढ़ सौ रुपए, अब पचास रुपए को बढ़ाकर डेढ़ सौ रुपए कर दिया, सौ रुपए बढ़ाकर तीन सौ रुपए कर दिया है। आपको तीस परसेंट टिकटें डेढ़ सौ रुपए प्रति टिकट निम्न श्रेणी के लिए, तीन सौ रुपए प्रति टिकट उच्च श्रेणी के लिए देनी पड़ती हैं। इसमें एक बात और है, जिसे सुनकर आप हैरान होंगे कि तत्काल की टिकट बीच की जर्नी की नहीं मिलती है। यात्रा के आरंभ से, जहां से गाड़ी चलती है और जहां गाड़ी समाप्त होती है, वहां तक की टिकट लेनी पड़ती है। यानी अगर कोई गाड़ी अमृतसर से मुंबई तक के लिए चलती है और कोई व्यक्ति जालंधर से भोपाल तक की यात्रा करना चाहता है तो उसे टिकट अमृतसर से मुंबई तक की टिकट खरीदनी पड़ेगी। उसे किराया अमृतसर से मुंबई तक का देना पड़ेगा। अमृतसर से मुंबई तक का किराया उसमें जोड़ दिया, यद्यपि उसने यात्रा तो जालंधर से भोपाल तक की की। गरीब का टिकट पर डेढ़ सौ रुपए ज्यादा गया। अमीर का तो तीन सौ, जिसका उच्च श्रेणी में केवल निम्न दर की बात कर रही हूं, उसने डेढ़ सौ रुपए दिए। पांच दिन पहले तक यानी सत्तर परसेंट टिकटें सामान्य किराए पर और बाकी बीस परसेंट टिकटें इस पर। यह तो पहला राज है।

दूसरा राज, कैंसिलेशन चार्जेस होते हैं। आप यात्रा के लिए टिकट खरीदते हैं तो बहुत बार उसके साथ-साथ आप रद्द भी करवाते हैं। कैंसिलेशन चार्जेस को डबल कर दिया। ...(व्यवधान)... फर्स्ट ए॰सी॰ का पचास से सत्तर, मगर सैकिण्ड ए॰सी॰ का तीस से साठ, स्लीपर का बीस से चालीस और वेटिंग लिस्ट का दस से बीस कर दिया। यह डबल कर दिया।

तीसरा राज, जिसे सुनकर आप हैरान होंगे। पूरी दुनिया में यह प्रथा है कि जब रिटर्न टिकट साथ बनाई जाती है तो पैसा कम लगता है। अपने यहां भी अगर आप हवाई टिकट दिल्ली-लंदन, लंदन-दिल्ली लेंगे तो कम पैसे में मिलेगी, अकेली लेंगे तो ज्यादा पैसे में मिलेगी, लेकिन रेलवे ने कहा कि अगर आप रिटर्न टिकट बनवाएंगे तो आपको प्रति टिकट दस रुपए, बीस रुपए ज्यादा देने पड़ेंगे। यदि ओन वर्ड जर्नी लेंगे, यहां से भोपाल तक की ली, एक दिन रुककर भोपाल से मुंबई तक की ली, इकट्ठे टिकट बनवाई तो भी आपको दस रुपए, बीस रुपए ज्यादा देने पड़ेंगे। यह तीसरा राज था। अब चौथा राज ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: कितने राज हैं?

श्रीमती सुषमा स्वराज: कुछ ट्रेन्स हैं, जिनका नाम सुपर फास्ट कर दिया।

प्रो॰ राम देव भंडारी (बिहार): कुछ राज दूसरे दिन के लिए भी रखने चाहिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: बिना गति बढ़ाए इन ट्रेन्स का नाम सुपर फास्ट ट्रेन कर दिया और बीस रुपए, पच्चीस रुपए प्रति टिकट [illegible] दिया।

पांचवां राज। उपसभापति जी, हिन्दुस्तान में लोग बहुत तीर्थ यात्राएं करते हैं। हर धर्म के लोग तीर्थ यात्राएं करते हैं। हिंदू लोग चारों धाम जाते हैं, मुस्लिम लोग अजमेर शरीफ जाते हैं, उर्स के लिए जाते हैं। जो स्पेशल बोगीज लगाई जाती हैं, उन स्पेशल बोगीज पर सर्विस टैक्स दस परसेंट से बीस परसेंट कर दिया। उनके प्रति घंटा हॉलिंटग चार्जेस होते थे। 130 रुपए प्रति घंटे का हॉलिंटग चार्ज था, इसे बढ़ाकर 600 रुपए प्रति घंटा कर दिया।

श्री उपसभापति: यह राज नहीं है। यह कल डिबेट में आ गया है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: पेंट्री कार के चार्जेस पच्चीस रुपए प्रति किलोमीटर की बजाय पैंतालीस रुपए प्रति किलोमीटर कर दिया। मैं आपके माध्यम से रेल मंत्री जी से केवल यह जानना चाहती हूं कि मैंने आपको जितनी मदें बताई हैं, मेरा पहला प्रश्न है कि क्या ये सब सही हैं, तथ्य पर आधारित हैं? अगर यह तथ्य पर आधारित हैं तो क्या यह वृद्धि आपकी जानकारी और आपकी अनुमति से की गई? यह वृद्धि आपकी अनुमति से की गई है या अधिकारियों ने अपने आप कर दी है? तीसरा सवाल, यदि यह वृद्धि आपकी अनुमति से की गई है तो क्या आप इस वृद्धि को उचित मानते हैं? अगर आप इस वृद्धि को उचित मानते हैं तो यह गाना गाना बंद कीजिए कि आम आदमी पर बोझ डाले बिना बीस हजार करोड़ रुपए कमाए हैं। यह चमत्कार नहीं चतुराई है, आम आदमी की लुटाई है।

प्रो॰ राम देव भंडारी: मान्यवर ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए। नहीं, नहीं आप बैठिए। भंडारी जी यह सही नहीं है। मंत्री जी आप जवाब दीजिए।

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद): उपसभापति महोदय, मैं उन तमाम माननीय सदस्यों, जिन्होंने बहस में हिस्सा लिया और जिन्होंने नहीं लिया, के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं। मैं आप सभी को आश्वस्त करना चाहता हूं कि आपके द्वारा जो सुझाव दिए गए हैं, जो खामियां बताई गई हैं, दर्शाई गई हैं, अगर तथ्य पर आधारित होंगी तो हम निश्चित रूप से इस पर उचित कार्रवाई करेंगे। कल मैंने बहुत सारे माननीय सदस्यों के भाषण सुने, देश भर की पत्र-पत्रिकाओं के reactions को भी जाना। लोगों ने भारतीय रेल के कायाकल्प की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और लोगों ने party barriers से अलग हटकर इसकी सराहना की है – चाहे पक्ष हो, चाहे प्रतिपक्ष हो, जो पहले काफी aggressive हुआ करते थे, सबने इसकी प्रशंसा की है। जब कोई खामी नजर नहीं आ रही है,

कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है, तो उन तमाम घिसी-पिटी बातों को खामियां और राज खोलने के संदर्भ में कहा गया। मैं माननीय सुषमा जी के सवाल का जवाब दूंगा, लेकिन हमको भी इस राज को जानने का हक है कि वह चिट्ठी किसने लिखी?

श्रीमती सुषमा स्वराज: ये बातें चिट्ठी में नहीं हैं, ये बातें चिट्ठी में नहीं हैं ...(व्यवधान)

श्री उपसभापति: वह उनकी रिसर्च है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: जो बेचारा भुक्तभोगी है ...(व्यवधान) कोई भुक्तभोगी है ...(व्यवधान) वह चिट्ठी मैं आपको ही दे देती हूं ...(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद: ले लेंगे।

श्रीमती सुषमा स्वराज: ये सब बातें उसमें नहीं लिखी हैं, उस बेचारे भुक्तभोगी ने तो अपनी दुर्दशा बताई है ...(व्यवधान) मैं अभी यह चिट्ठी आपको दे देती हूं ...(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद: हम बाद में ले लेंगे।

उपसभापति जी, आज इनको कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है कि क्या खामी निकाली जाए रेलवे में और रेलवे छोड़ दीजिए, लालू प्रसाद में। खामी निकालने के लिए चारों तरफ लोग बड़े परेशान हैं और खासकर भाजपा के लोग परेशान हैं। अब भाजपा में भी अच्छे-भले लोग हैं। बाहर सारे लोगों ने और कल हाउस में भी आपने देखा होगा कि सबने इस रेल बजट की प्रशंसा की है। मैं किन्हीं के कार्यकाल के ऊपर टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं, कब कौन मंत्री थे, कब क्या डंबल जीरो उन्होंने बिठाया था, उस राज को भी मैं पढ़ना नहीं चाहता हूं। राजनीतिज्ञों को मैं देखता हूं और उनके व्यक्तिगत कैरेक्टर को मैं देखता हूं और जब सार्वजनिक जीवन में लोग आकर भाषण करते हैं, तो मुझे हंसी आती है। खैर, कौन क्या बोलते हैं, नहीं बोलते हैं, इसकी परवाह किए बिना भारतीय रेल आज अपनी उंचाइयों को छू रही है और UPA की चेयरमैन, श्रीमती सोनिया गांधी के मार्गदर्शन और माननीय प्रधान मंत्री जी के कुशल नेतृत्व में हम आगे बढ़ रहे हैं। लाल किले की प्राचीर से माननीय प्रधान मंत्री जी ने यह घोषणा की थी कि देश को आगे बढ़ाना है, देश को आगे तरक्की करनी है और globalisation के युग में localisation पर ध्यान न देकर, जब हम उस युग में प्रवेश कर रहे हैं, तो हमको दुनिया की चुनौती का मुकाबला करना है।

उपसभापति जी, भारतीय रेल, भारत की lifeline है और यह हम सबकी धमनी है। एक दिन भी अगर रेल बंद हो गई, तो पूरे देश का आर्थिक ढांचा चरमरा जाएगा, इतना बड़ा हमारा नैटवर्क है और नैटवर्क में हम चारों तरफ देश के एक कोने से दूसरे कोने में हजारों-हजार गाड़ियां रोज चलाते हैं। हम अपने देशवासियों को ट्रेन में बिठाते हैं, तो लगता है कि भारत के लोग चढ़ रहे हैं – अलग बोली, अलग भाषा, यही हमारी भारतीय रेल है, लेकिन भारतीय रेल की दशा और दिशा में जंग लगा हुआ था, उसी रेल की आज देश भर में नहीं, दुनिया भर में काफी प्रशंसा हो रही है। जो हमारे

उपभोक्ता हैं, वे इसकी प्रशंसा कर रहे हैं। आप सारे अखबारों को उठाकर देख लीजिए, देश के किसी कोने में आप चले जाइए, जब से हमने रेल बजट प्रस्तुत किया है, जब से हम लोग यहां आए हैं, चारों तरफ भारतीय रेल की प्रशंसा हो रही है। चारों तरफ चूंकि लोगों ने खट्टा-मीठा मजा चखा है, एनडीए के शासन में और पहले भी लोगों ने देखा है। कोई कारण नहीं कि एक व्यवसायी एक बस निकालता है और उसकी देखभाल से दूसरे साल दूसरा बस निकाल लेता है, लेकिन हम 11-12 हजार गाड़ियां चलाते हैं और फिर हमारी स्थिति बद से बदतर थी। सदन के अन्दर और सदन के बाहर जो हमारे कुछ मित्र हैं, वे आलोचना करते हैं कि यह तो मानते हैं, स्वीकार करते हैं कि यह जो turn around है, यह उनके द्वारा दिया गया नींव है, उन्हीं का दिया हुआ foundation है और safety की बात करते हैं कि safety fund निधि आपने बनाया था। महोदय, रेलवे की हालत इतनी बद से बदतर थी कि रेल मंत्रालय को अपने asset को, अपनी सारी सम्पत्तियों के, लाइनों के रखरखाव के लिए पूरे भारतीय रेल का दिवाला निकला हुआ था और accidents का सिलसिला जारी था। आपको मालूम होगा कि इसकी वजह से डा॰ राकेश मोहन कमेटी बनी थी। मैं नहीं था, अगर मैंने बनाया होता, तो लोग कहते कि आपने बनवा कर इस तरह की रिपोर्ट दिलवाई। डा॰ राकेश मोहन कमेटी के गठन का एक ही उद्देश्य था और जो terms and conditions थे कि क्या हम इसको प्राइवेट सेक्टर में दे सकते हैं या नहीं दे सकते हैं, इस पर भी आप अपना सुझाव दें और कैसे हम accidents को, दुर्घटनाओं को रोक सकें और रोक ही नहीं सकें, इस रेल को चलाया कैसे जाए। महोदय, हमने यह कहा कि लगता है कि भारतीय रेल को जंग लगा हुआ है और काफी ठोक-ठठा कर डा॰ राकेश मोहन कमेटी ने इसे देखा। रेलवे के पास पैसा नहीं था, हालत बद से बदतर थी, जिन्होंने यह foundation दिया, कैसा foundation दिया आपने, उसी को लेकर आप देश भर में हल्ला करते रहे, सब जगह, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से लेकर टेलीफोन से, "India is shining, India is shining". आपने कैसा पेड़ लगाया कि वह shining ही करते रह गया और बिल्कुल बांझ पेड़ निकला, उससे एक भी फल और फूल नहीं निकला। ...(व्यवधान)... आप रुकिए न! आपने क्या आदत बना लिया है। आपको सुनना चाहिए न। आप सुन लीजिए, सुनने के बाद फिर कुछ पूछना होगा, तो पूछिएगा, जैसे माननीय सदस्या सुषमा जी ने पूछा है, उनका भी हम जवाब देंगे। टीवी पर भी रात को एक घंटा एक टीवी वाले ने जो *उसमें भी आपकी महक आती है, उसमें हम बताएंगे। महोदय, हमारे मित्र जेटली जी बैठे हुए हैं, वे काफी जानकार हैं, कानून के भी ...(व्यवधान)... नहीं, आपको कहां कहा, हमने टीवी को कहा कि *आजकल आप लोग कम सुनते हैं, सशंकित रहते हैं।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: आप टीवी के बारे में भी नहीं कह सकते। आप टीवी के बारे में कैसे कह सकते हैं कि *

---

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री लालू प्रसाद: *खिलाफ बात नहीं है।

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: खिलाफ बात नहीं है, लेकिन आप उसका माखौल क्यों उड़ा रहे हैं। आज टीवी हमारे समाज का एक स्तम्भ है।

श्री लालू प्रसाद: यह जो foundation की बात आपने ...(**व्यवधान**)... अब बात छोड़ दीजिए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We are checking it.

श्री लालू प्रसाद: विशेषज्ञ दल ने अपने प्रतिवेदन में कहा था कि भारतीय रेल आज वित्तीय संकट के कगार पर खड़ी है। दो टूक शब्दों में, यदि वर्तमान प्रगति दर आगे जारी रही, तो वह दिन दूर नहीं जब भारतीय रेल वित्तीय रूप से कंगाल हो जाएगी, अगले 16 वर्षों में भारत सरकार पर 61 हजार करोड़ रुपए की अतिरिक्त देयता आन पड़ेगी। यदि सिर्फ संचालन स्तर पर देखा जाए, तो भारतीय रेल लाइलाज ऋण संकट के जाल में फंस चुकी है। यह रेल की हालत थी, जिसको हम लोगों ने यहां पहुंचाया है और महोदय, उसमें देशवासियों का ही नहीं, श्री कृष्ण भगवान ने गोवर्द्धन पर्वत को अंगुली पर उठाया था, तो वे गिरिधर कहलाए, लेकिन उनके साथ हजारों लाठी वाले लोगों ने सहारा दिया था। आखिर यह turn around क्यों हुआ? बाहर के बच्चे, देश के बच्चे creams of the society आते हैं, हमारे बच्चे आते हैं और पूछते हैं, लालू प्रसाद ने क्या जादू किया? हमने कहा कि अभी जादू देखा है, टोना बाकी है। जादू टोना का खेल हो गया, अब अगले वर्ष इंद्रजाल का खेल होगा, वह देश के सामने आएगा।

महोदय, अभी वर्ष 2007-08 के लिए 7594 करोड़ की पूरक मांग-मुक्तक डीजल कीमत यातायात में वृद्धि के कारण बढ़ी हुई ईंधन पर लागत-यह रेलवे निधि से अधिक विनियोग आदि के लिए की जा रही है। महोदय, विस्तार से आगे फिर बहस करेंगे, बहस करेंगे। महोदय, सब से बड़ी बात, छिपाने वाली बात नहीं, हम कोई बात छिपाकर नहीं करते, कहां क्या बढ़ाया गया, कहीं-कहीं चर्चा होती है हमने भोजन पर बढ़ा दिया। महोदय, हमने भोजन पर नहीं बढ़ाया, कहीं नहीं बढ़ाया, लेकिन यह जो सर्विस टैक्स फाइनेंस डिपार्टमेंट के द्वारा लगाया जाता है ...(**व्यवधान**)... वह अलग बात है, उस पर बाद में चर्चा होगी। महोदय, 3-4 रुपया बढ़ाया है, लेकिन उस में हम कुछ करने जा रहे हैं। उसमें 20 तरह के आइटम्स होंगे-उसमें drumstick रहता है, बिस्कुट, सलाद खुला होगा क्योंकि बंद रहने से infection हो सकता है। दाल, तरकारी, मुर्गा, मछली- ये 10 तरह की बात होती है। हम सोचते हैं कि उस को शॉर्टकट कराया जाए, छोटा आइटम कम रहे और वह हाइजैनिक हो और लिट्टी-चोखा बिकता है। वैजेटेरियन जो लोग हैं, साउथ के भाई हैं, उनके लिए अलग खान-पान है, उसमें भी हम शॉर्टकट करेंगे। हम सॉलिड भोजन देना चाहते हैं। महोदय, हम इसको

दिखवा रहे हैं और दिखवा ही नहीं रहे हैं, हम चाहते हैं जैसे नॉर्थ बिहार के लोग हैं उन्हें भात और बढ़िया गाढ़ा दाल और पापड़ हो और आलू का चोखा ...(व्यवधान)...

श्री बनवारी लाल कंछल (उत्तर प्रदेश): मट्ठा नहीं मिल रहा है।

श्री लालू प्रसाद: मट्ठा नहीं मिलता तो छाछ पीजिए। महोदय, मैंने भोजन के लिए कहा है कि इसमें मीनू बदलकर रखिए, रोज मीनू को बदलना है। महोदय, आखिर हम लोग घर में जो खाना खाते हैं सो, पार्टी में खाते हैं सो, होटल में खाते हैं सो और रेलवे में खाते हैं सो। अब उस में हजारों-हजार आदमी का भोजन बनता है, उसकी वह पैकिंग करता है, उसको ठंडा करता है, गर्म करता है तो फर्क आ जाता है, पेट बैलून हो जाता है, लोगों का पेट भर जाता है, यह हम स्वीकार करते हैं। हमें देखना है कि इसको हम कैसे हाइजैनिक बना सकें।

महोदय, जब से हम रेलवे मंत्री बने हैं, हमने भाड़ा नहीं बढ़ाया है, सब-अर्बन ट्रेन में नहीं बढ़ाया है। उस में 70-80 लाख लोग ट्रेवल करते हैं। मुंबई में हम घाटे में हैं, हम उसमें पहले से घाटे में हैं। कोलकाता में अगर उस पर एक पैसा बढ़ा दिया तो कल से सारे रेल जलाना शुरू हो जाएगा। वह सब-अर्बन ट्रेन है और उसमें भी हम ने reduce किया है। उसमें भी कॉर्पोरेट में, ऑफिस में काम करने वाले लोग जाते हैं और भाड़ा क्या लगता है-3 रुपए, 4 रुपए, 5 रुपए। उसका बहुत जगह रिअम्बरर्समेंट होता है। फिर भी हमने कम किया। महोदय, मुंबई की जो हालत है, वहां जो भीड़-भीड़ है, उस पर भी हमारा काफी ध्यान है। हम उसे कैसे disburse करें, इसके लिए पर्याप्त धनराशि हमने दी है। हमने भाड़ा इस साल भी नहीं बढ़ाया, हमने एक रुपया कम किया है, सुपर फास्ट चार्ज 20 प्रतिशत कम किया। महोदय, जनरल कोच में जिसमें सचमुच में लोग खड़े होकर जाते थे, उसमें भी विस्तार किया है, गद्देदार सीटें लगायी हैं। महोदय, हमने काठ युग से शुरू किया था और काठ पर बैठकर लोग जा रहे थे, हमने उनके लिए दो इंच की गद्देदार सीट लगाने का काम किया है। महोदय, 2 एन्सी०, 3 एन्सी० के हम ढाई हजार कोच हर साल नए डिजाइन से बनाने जा रहे हैं। हमने इसमें भेदभाव नहीं किया है 2 एन्सी०, 3 एन्सी०, में लोग बैठते हैं। महोदय, लोग गरीब रथ की बात करते हैं, कहते हैं गरीब रथ का नाम बदल दो। गरीब रथ का नाम काहे बदल दो? लोगों को इसमें शर्म आती है? महोदय, पैसा है, लेकिन हमारे गरीब रथ में लोग बैठते हैं। बैठिए, उसमें कोई रोक नहीं है। जिनको बैठना हो, बैठिए। हमारा देश गरीब है। हमारे यहां कितने प्रतिशत लोग अमीर हैं? कितने आदमी अमीर हैं? जो हाई फाई वाले लोग हैं, अगर आप उनको छोड़ कर देखेंगे तो बहुत कम लोग अमीर हैं। इसलिए महोदय, गरीब रथ ही नहीं, अब आगे भविष्य में पूरी भारतीय रेल में एयर कंडीशंड गाड़ियां ही हम चलाएंगे, हम यह आश्वस्त करना चाहते हैं। हमने पूरे विस्तार से बताया है कि हमने कितनी गाड़ियां दीं, हमने सेवा में कितना विस्तार किया और फंड कितना दिया।

राकेश मोहन कमेटी में प्राइवेट की ओर आप चले थे-स्वामी जी हैं कि नहीं हैं- स्वामी जी बोल रहे थे कि होटल दे दिया, फलां जगह होटल दे दिया, फलां जगह मोटल दे दिया, यह कर दिया, वह कर दिया। यह हाउस और सुषमा जी गवाह हैं कि आपके अपने शासन में भारत सरकार का फंड ठीक करने के लिए बड़े पैमाने पर सारे डिपार्टमेंट्स में कर्मचारियों की छंटनी और पोस्ट्स को समाप्त कराया गया था। जहां हम 16 लाख थे, आपके शासन काल में छंटनी कराकर, पोस्ट्स खत्म करके, भारतीय रेल में भी एक-डेढ़ लाख पदों को समाप्त कर दिया गया था और उन पर बहाली नहीं हुई। मैं यहां उन चीजों का उल्लेख करना नहीं चाहता, चिट्ठी का उल्लेख करना नहीं चाहता हूं। वह स्थिति थी। यह जो मैन पावर है, हमारा जो human being है, हमारे देश के जो गरीब-गुरबा बेरोजगार लोग हैं। बेरोजगारी की चर्चा हुई थी। अगर चाहेंगे तो बेरोजगारी पर कभी हम ह्वाइट पेपर अपनी सरकार के सामने रखेंगे। हम इन पदों पर बहाली कर रहे हैं। हमने कहा कि कोई छंटनी नहीं होगी, भारतीय रेल में पद समाप्त नहीं किए जाएंगे। हम एस॰सी॰, एस॰टी॰ और ओ॰बी॰सी॰ का बैकलॉग पूरा कर रहे हैं। आर॰पी॰एफ॰ में 8 हजार लोगों की बहाली जारी हैं आपको पता करना चाहिए। हम चाहते हैं कि हम 40 हजार बहाली करें, 40 हजार कम-से-कम। हमें फाइनांस डिपार्टमेंट में जाना पड़ता है, ताकि वे हमको यह स्वीकृति दे दें। तो पौधा हमने लगाया और आप लोग कह रहे हैं कि फल हम खा रहे हैं। हम फल नहीं खा रहे हैं। दुनिया भर के लोग-ठीक है, आपने भी प्रशंसा की। हार्वर्ड के बच्चे यहां पढ़ने आए, जानने आए, क्योंकि यह उनका part of the education है। दुनिया भर से चिट्ठी आई है। मैं चिट्ठी दे दूंगा। यह भी राज मैं आपके सामने खोलना चाहता हूं। यह हार्वर्ड बिजनेस स्कूल, अमेरिका ... (व्यवधान)... आप सुनिए न? ...(व्यवधान)... नहीं, आप सुनिए ...(व्यवधान)... आप सुन तो लीजिए। भारतीय रेलवे ने देश का मान-सम्मान और गौरव कितना बढ़ाया, इस पर मोहित होकर, एट्रेक्ट होकर हार्वर्ड बिजनेस स्कूल, अमेरिका की एक चिट्ठी आई है कि वहां अप्रैल में एक सेमिनार है। उन्होंने हमें बुलाया है, वे लोग आए थे, अब मैं जा रहा हूं। ...(व्यवधान)... प्रेसिडेंट फॉर यूनिवर्सिटी, अमेरिका मैं जिम्मेवारी से बोल रहा हूं, वहां से भी एक चिट्ठी आई है, मैं वहां भी जा रहा हूं। विश्व बैंक, वाशिंगटन भी हैरत में है। उसने भी बुलाया है। मैं वहां यू॰पी॰ चुनाव के बाद जा रहा हूं। ... (व्यवधान)... हां, आएंगे नहीं तो क्या वहीं रह जाएंगे? ...(व्यवधान)... वहां रहने का हमारा अब-इसके आगे हम नहीं बोलेंगे ...(व्यवधान)... Silicon Valley, Woodmission, America ने भी बुलाया हैं ...(व्यवधान)... निम्नलिखित विद्यार्थी पढ़ने आ रहे हैं-सुन लीजिए पहले। MIT अमेरिका। MIT कोई साधारण संस्था नहीं है। University of Texas, America, विश्वविख्यात Virginia University, America. तो जब अमेरिका मेरी तरफ देख रहा है, पूर भारतीय रेल की तरफ देख रहा है, तो आप भी बताइए कि किससे सर्टिफिकेट लिया जाए। यह है क्रेडिट हमारी भारतीय रेल का। हमारे कर्मचारियों और अधिकारियों ने कंधे-से-कंधा मिलाकर भारतीय रेल का और भारत का शान बढ़ाया। ...(व्यवधान)... पहले भी बच्चे आ चुके हैं ...(व्यवधान)... और राकेश मोहन ने कहा था कि रेलवे बोर्ड में ...(व्यवधान)...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: रेलवे बोर्ड में राकेश मोहन को क्या करना है ...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: महोदय, ...(व्यवधान)... अहलुवालिया साहब कह रहे थे कि ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: अहलुवालिया जी, मंत्री जी को बोलने दीजिए।

श्री लालू प्रसाद: महोदय, सारी फाइलें हैं, बाते हैं कि ये कहां जा रहे थे? ये निजीकरण की तरफ जा रहे थे। जितने भी होटल हैं IRCTC है, जितना है बजट होटल खोलने का, वह इनके द्वारा हुआ था, NDA के समय हुआ था, हमारे छोटे भाई नीतीश कुमार जी मंत्री थे, उनके आदेश पर, महोदय, आगे जो खेल होने वाले हैं, स्पोर्ट्स होने वाले हैं, इसके लिए। मैं किसी को भी यह नहीं कहता कि होटल खोलना है, मोटल खोलना है या क्या खोलना है, जमीनों के मामले में। ये निजीकरण की तरफ जा रहे थे। मैं आश्वस्त करना चाहता हूं, महोदय, कि हमने 20 बार कहा है कि भारतीय रेल किसी भी सूरत में, जो हमारा कोर सैक्टर है, भारतीय रेल को हम किसी भी सूरत में निजी हाथों में नहीं जाने देंगे। आपके टर्म्स एंड कंडीशंस में था भारतीय रेल के मामले में कि रेलवे बोर्ड को खत्म कर दो। यह भी रिकार्ड में कि रेलवे बोर्ड को खत्म करिए और हर साल 20 प्रतिशत भाड़ा बढ़ाते जाइए। पदों को खत्म करिए। उसी के अनुरूप नीतीश कुमार जी काम कर रहे थे, NDA काम कर रहा था और आपने देश के बेरोजगारों के साथ नाइंसाफी की थी। हम आज इंसाफ कर रहे हैं। सोनिया जी, मनमोहन सिंह जी इंसाफ करा रहे हैं ये जलन के शिकार लोग हैं मैं उन चीजों को नहीं लाना चाहता हूं, कंट्रोवर्शियल बात को। जब सोनिया जी का ये लोग नाम सुनते हैं तो खासकर सुषमा जी को न जाने क्या परेशानी हो जाती है। ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: सुषमा जी ने तो बैल्लारी में पटखनी दी है सोनिया जी को। ...(व्यवधान)... यह दुखती रग है ...(व्यवधान)... इसको मत दिखाया करो। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: बैठिए, बैठिए। ...(व्यवधान)... आप लोग बैठिए। ...(व्यवधान)... पाणि जी, आप बैठिए। ...(व्यवधान)... भारद्वाज जी, आप बैठिए। ...(व्यवधान)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: *

श्री सुरेश भारद्वाज: *

श्री उपसभापति: पाणि जी, ...(व्यवधान)... भारद्वाज जी, आप बैठिए। ...(व्यवधान)... Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

---

*Not recorded.

श्री रुद्रनारायण पाणि: *

श्री सुरेश भारद्वाज:*

श्री उपसभापति: आप लोग बैठिए। ...(व्यवधान)... पाणि जी, आप बैठिए। बैठिए। ...(व्यवधान)... यह क्या हो रहा है। बैठिए। ...(व्यवधान)...Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... देखिए, सुरेश भारद्वाज जी, ऐसा बिहेव ठीक नहीं है।

श्री लालू प्रसाद: महोदय, इन्होंने भाड़ा बढ़ाया और देश की जनता से हम लोगों ने आह्वान किया कि इनको कोसों दूर रखिए नहीं तो ये देश की रेलवे को निजी हाथों में दे देंगे और कहेंगे कि रेलवे कर्मचारियों की छंटनी करो, छंटनी करो। बिना हर्रे फिटकरी के, वही पुरानी रेल, वही स्टाफ, वही कर्मचारी और वही अधिकारी और अब हमको यह डराते हैं कि इतना आप लदान कर रहे हो, रेल टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी। DRF में, रख-रखाव में हम इतने पैसे खर्च कर रहे हैं और जितना हम लदान कर रहे हैं, उतना लदान होता था उनके समय में, लेकिन अंडरवेट करके काफी पैसे की उगाही की जाती थी। मैं बार-बार कहता हूं ...(व्यवधान)...

श्री यशवंत सिन्हा (झारखंड): उपसभापति जी, यह एक बहुत गंभीर चार्ज लालू जी लगा रहे हैं और मंत्री है, उसी बिहार के मंत्री हैं, इनको जनरल बोलने का हक नहीं है। ...(व्यवधान)... यह स्पेसिफिक लड़ाई है, आप स्पेसिफिक बोलिए। ...(व्यवधान)...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: यह क्या है, सर? ...(व्यवधान)... यह किस पर इल्जाम लगा रहे हैं? ...(व्यवधान)... राम विलास पासवान भी थे रेल मंत्री, माधवराव सिंधिया भी थे रेल मंत्री नीतीश कुमार भी थे मंत्री ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: अहलुवालिया जी, आप बैठिए। ...(व्यवधान)...

SHRI ARUN JAITLEY (Gujarat): Sir, this is the reply on the Railway Budget, Therefore, the Minister must be told to give a serious reply. ...*(Interruptions)*...

श्री एम॰ वेंकैया नायडु (कर्णाटक): सर, हम डिस्टर्ब नहीं करना चाहते, हम सुनना चाहते हैं। ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: आप मेरी बात को सुन तो लीजिए। ...(व्यवधान)...

THE MINISTER OF LAW AND JUSTICE (SHRI H.R. BHARDWAJ): Have you the licence to speak when the Minister is speaking? ...*(Interruptions)*...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: सर, यह नहीं चलेगा ...(व्यवधान)...

---

*Not recorded.

श्री उपसभापतिः अहलुवालिया जी, आप बैठिए ...(व्यवधान)... पाणि जी, बैठिए ...(व्यवधान)... जब आपकी तरफ से वे लोग बोल रहे हैं, तब आप क्यों बोल रहे हैं ...(व्यवधान)...

श्री यशवंत सिन्हाः सर, हम इनसे यह पूछना चाहते हैं, सारी दुनिया इस बात को जानती है कि ...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्यः इनमें सच्चाई को सुनने का साहस नहीं है, आप बाहर जाइए ...(व्यवधान)...

SHRI ARUN JAITELY: He has made specific charges that his predecessors have made money. ...(*Interruptions*)...

SHRI YASHWANT SINHA: Either he must prove the charges he has made or withdraw ...(*Interruptions*)...

श्री उपसभापतिः देखिए, आप सुनिए ...(व्यवधान)... वह बोल रहे हैं ना, तब आप बैठिए ...(व्यवधान)... मंत्री को क्या बोलना है, यह बात क्या मैं उन्हें बताऊंगा ...(व्यवधान)... प्लीज, आप बैठिए, बैठिए ...(व्यवधान)... He is giving the reply. देखिए यह क्या बात है? प्लीज, आप बैठिए ...(व्यवधान)... आप बैठिए ...(व्यवधान)... देखिए ...(*Interruptions*)... The Chair cannot direct him to speak in a particular way. ...(*Interruptions*)... Can I direct? ...(*Interruptions*)...

SHRI ARUN JAITLEY: He has not answered even a single question. ...(*Interruptions*)...

श्री उपसभापतिः आप बैठिए ...(व्यवधान)... आप बैठिए ..(व्यवधान)... देखिए, it is very difficult for the Chair to tell the speaker that he can and cannot speak in this way. The Chair has also got its responsibility. The Minister is giving the reply on the debate which has taken place.

SHRI YASHWANT SINHA: No, he is not. ...(*Interruptions*)...

श्री उपसभापतिः आप बैठिए ...(व्यवधान)... आप बैठिए ..(व्यवधान)... This is not the way. ...(*Interruptions*)... आप बैठिए, आप बैठिए ..(व्यवधान)...आप मेरी बात भी कंप्लीट नहीं होने देते हैं तो मैं क्या करूं?

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, you have the full authority to give directions to the Minister.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I know when to give directions and there is no need for you to tell the Chair. When directions are to be given, the Chair would do so. Now, the Minister is giving a reply to the debate and it is for the Minister to answer on whatever debate has taken place. The Chair cannot direct him on what reply he has to give, how he has to give it, what words he has to use; unless the words used are unparliamentary, I cannot give any directions. ...(*Interruptions*)...

श्री लालू प्रसाद: सर, मैं यह बता रहा था ..(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, आपने बिल्कुल सही कहा कि आप मंत्री जी को कोई निर्देश नहीं दे सकते हैं, लेकिन जिस शब्द का उन्होंने इस्तेमाल किया है, वह कोलोकियल शब्द है और आप उसका अर्थ नहीं जानते हैं। उन्होंने कहा कि इससे पहले के मंत्री उगाही करते थे, इसका मतलब यह है कि वह करप्शन करते थे और ब्राइब लेते थे। इस शब्द के ऊपर ही हमारी तरफ से यह ऐतराज हुआ है ..(व्यवधान)... उसके ऊपर ही हमने ऐतराज किया है ..(व्यवधान)... यह कोलोकियल वर्ड है ..(व्यवधान)...

SHRI SHANTARAM LAXMAN NAIK (Goa): Does she have the right to speak in between? (*Interruptions*)

श्री उपसभापति: मैं अभी देखता हूं कि उन्होंने क्या शब्द इस्तेमाल किया है ..(व्यवधान)... I shall look into it. (*Interruptions*) I shall look into those words. (*Interruptions*) मैं इसे देखूंगा ..(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार): सर, मैं भी बिहार से हूं। जिस शब्द का इस्तेमाल इन्होंने किया, उस शब्द का मतलब घूस लेना होता है।

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: There is nothing unparliamentary about it, but he is levelling a charge. (*Interruptions*)

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, हमारा यह चार्ज है ..(व्यवधान).. या तो वह इस चार्ज को सबस्टैंशिएट करें ..(व्यवधान)..

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Just a minute, Sir. We had a healthy debate and we had healthy exchanges also. Even now we could have healthy exchanges, but unfortunately, we object on two counts? One is, the hon. Minister is not speaking on the Railway Budget. Secondly, he has levelled serious charges. (*Interruptions*)

1.00 P.M.

श्री लालू प्रसाद: हम और किस चीज पर बोल रहे हैं (*Interruptions*)

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: श्री राम विलास पासवान जी मंत्री रहे हैं और भी बहुत बड़े-बड़े व्यक्ति मंत्री रहे हैं, उनमें से कौन उगाही लेता था?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, that is (*Interruptions*)... If he is making a charge, you could move a Privilege Motion. What can I do? (*Interruptions*)... If he is making allegations, you may give a Notice under the rules. (*Interruptions*).... I need to examine the records. ...(*Interruptions*)... If he has made any mis-statement ...(*Interruptions*)... वे क्लेरिफाइ करना चाहते हैं, He wants to clarify. ...(*Interruptions*)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, day before yesterday. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He wants to clarify. ...(*Interruptions*)... He wants to clarify. ...(*Interruptions*)... देखिए, वे आपके ऑब्जेक्शन को क्लेरिफाइ करना चाहते हैं।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: महोदय, ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He wants to clarify. ...(*Interruptions*)... He wants to clarify. ...(*Interruptions*)... वे क्लेरिफाइ करना चाहते हैं, Mr. Ahluwalia, he wants to clarify. ...(*Interruptions*)..

श्री रवि शंकर प्रसाद: वह ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing will go on record. ...(*Interruptions*)... Nothing will go on record ...(*Interruptions*)... Mr. Ahluwalia, he wants to clarify. ...(*Interruptions*)... What are you doing? ...(*Interruptions*)... मि॰ अहलुवालिया, वे क्लेरिफाइ करना चाहते हैं, उनको मौका तो दीजिए।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया:*

श्री यशवंत सिन्हा:*

श्री उपसभापति: अब आप छोड़िए, यह आपके ऊपर है, मैं क्या करूं। अहलुवालिया जी, ...(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद: आप बैठिए, हमको बोलने दीजिए, ...(व्यवधान)

*Not recorded.

श्री उपसभापति: श्री यशवंत सिन्हा जी, अब वे क्लेरिफाइ करना चाहते हैं।....(**व्यवधान**) यह तो जबर्दस्ती है।....(**व्यवधान**)

श्री लालू प्रसाद: महोदय, आप इस पूरी प्रोसीडिंग को निकाल कर देखिए....(**व्यवधान**)सुन तो लीजिए। आप लोग अपने ऊपर लेकर और दूसरी बात में चले गए। महोदय, प्रोसीडिंग निकाल कर देखें।

श्री उपसभापति: मैं निकाल कर देखूंगा।

श्री लालू प्रसाद: उसको मैं फिर दोहराता हूं। मेरी बात को आप सुन लीजिए। मैं फिर दोहराता हूं कि हमने क्या कहा है। चतुर्वेदी जी ने कहा कि आप रेल में जो लगाम कस कर अपनी जो पीठ थपथपा रहे हो, इन्होंने कहा था रेल टुकड़ा-टुकड़ा हो जाएगा। महोदय, मैंने यह कहा कि किसी पार्टी, किसी नेता को उगाही की बात अगर हो तो हमको जो सजा देना हो दे दीजिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: क्या कहा?

श्री लालू प्रसाद: महोदय, आप रिकार्ड निकालकर देखिए। मैंने यह कहा कि लदान हम जितना कर रहे हैं उतना ही लदान उस समय भी होता था। हम जो एक्सल लोड की बात कर रहे हैं लेकिन सामानों का अंडर वेट करके ऐसे उगाही की जाती थी, अफसरों को मैंने पनिश किया था। ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: अगर मंत्रियों का है तो मैं निकाल दूंगा।....(**व्यवधान**)

श्री लालू प्रसाद: क्या बात करते हो? ....(**व्यवधान**).. गलत बात है, हमने नहीं कहा। .... (**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: देखिए, उन्होंने भी कहा है कि आप रिकार्ड देखिए।....(**व्यवधान**).. मैं रिकार्ड देखूंगा। अगर उसमें मंत्री का नाम है, तो मैं निकाल दूंगा....(**व्यवधान**)..

श्री लालू प्रसाद: मंत्री ने घूस लिया है, ऐसा मैंने नहीं कहा है। मैं यह पूरी जिम्मेदारी के साथ बोलता हूं।....(**व्यवधान**).. दानापुर में मिलेनियम ट्रेन को हमने रोका।....(**व्यवधान**)..

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी: क्या बोल रहे हैं? ....(**व्यवधान**)..

श्री उपसभापति: आप बैठ जाइये।....(**व्यवधान**)..

श्री लालू प्रसाद: नहीं, नहीं। इतना शऊर हमको है, उतना शऊर है, जितना आप समझ रहे हैं। महोदय, दानापुर में स्वत: उस मिलेनियम ट्रेन को हमने रोका।....(**व्यवधान**)..

श्री एम॰ वेंकैया नायडु: सर, तरीका देखिए।....(व्यवधान)..

यह तो होना चाहिए। otherwise, how can you move forward? He is agreeing to see the records. ...(*Interruptions*).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I said that I would see the records. ...(*Interruptions*).

श्री लालू प्रसाद: हम लोग आपकी भी कलई खोल देंगे।..(व्यवधान).. आपकी भी कलई हम लोग खोल देंगे।..(व्यवधान)..

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: देखिए, क्या कलई खोलेंगे?..(व्यवधान)..

श्री यशवंत सिन्हा: हम लोगों को धमकी दे रहे हैं?..(व्यवधान)..

श्री लालू प्रसाद: क्या बात है? ..(व्यवधान).. देखिए, ..(व्यवधान)..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned for 15 minutes.

The House then adjourned at seven minutes past one of the clock.

The House then reassembled at twenty minutes past one of the clock, MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The house is adjourned for half-an-hour.

The House then adjourned at twenty-one minutes past one of the clock.

The House reassembled at fifty one minutes past one of the clock,

[MR. CHAIRMAN in the Chair.]

श्री सभापति: माननीय सदस्यगण, जिस बात को लेकर विवाद चल रहा था, उसकी प्रोसीडिंग्ज मैंने देख ली हैं। उन प्रोसीडिंग्ज में इन्होंने किसी मंत्री पर कोई आरोप नहीं लगाया है ओर इसका स्पष्टीकरण स्वयं लालू जी भी कर देंगे।

श्री लालू प्रसाद: सर, भारतीय रेल मेरी रेल नहीं है, यह सभी की रेल है, सब लोगों की है, देश की है और यह भारत की शान है। इसका सम्मान देश में तो है ही, दुनिया भर में भी इसका डंका पिट रहा है। दुनिया में जो बाहर के देशों की रेल है, वह सबसे महंगी है और हमने सबसे सस्ता चला कर ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: पहले थोड़ा सा उस विषय पर बोल दीजिए, फिर मुझे जाना है।

श्री लालू प्रसाद: हां, तो वह क्लैरिफिकेशन मैं बताना चाहता हूं कि ये लोग आधी बात ही सुन पाए और आधी बात में ही इनको confusion हो गया। मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ बोल रहा हूं कि मैंने कभी भी, किसी मंत्री या एन०डी०ए० सरकार द्वारा उगाही की बात नहीं कही है। मैंने वह कहा जो अफसर लोग करते थे, अंडरवेट करते थे, मैं आपको रिकॉर्ड भी दिखा दूंगा। असल में लोग पूरी बात समझ नहीं पाए, इसलिए वह confusion हुआ।

श्री सभापति: ठीक है, अब शरू कीजिए।

श्री लालू प्रसाद: तो इसके लिए हमारे माननीय सदस्यों ने कई तरह की बातें कहीं कि रेलवे में उस समय छंटनी का सिलसिला चला था। 5th Pay Commission के बाद सारे महकमों में, रेलवे में भी कमी आई, उतनी हम छंटनी नहीं करते और उस कॉन्सेप्ट को आज हमने झुठलाया है, जिसमें अगर कोई कारपोरेट हाऊस सरकारी उपकरण घाटे में चलता हो, तो एक तर्क रहता है कि लोगों की छंटनी कर दो, पद को खत्म कर दो, यह जो मिथ बना हुआ था, उस मिथ को भारतीय रेल ने और हमारे 13-14 लाख जो कर्मी हैं, सभी लोगों ने इस मिथ को तोड़ा है, इसी के लिए देश और दुनिया भर में आश्चर्य है। सिर्फ हमने आम आदमी का ही ध्यान नहीं रखा है, महंगाई पर भी तमाचा मारा है। मैं आश्वस्त करना चाहता हूं कि महंगाई रोकने के लिए और further रिलीफ देने के लिए भारतीय रेल हमेशा राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार है। और भी कोई कमी होगी, कोई दिक्कत होगी, कोई त्रुटि होगी, तो हम सुझाव invite करते हैं और उसमें हम रेल का पूरा योगदान देंगे, यह भरोसा हम दिलाना चाहते हैं।

महोदय, आज गरीब लोग स्वाभिमान की जिंदगी जीते हैं और स्वाभिमानी होकर हमारी भारतीय रेल में सफर करते हैं। Passenger amenities से लेकर साफ-सफाई और संरक्षा हमारी priority है। चाहे गोधरा में जो हुआ, उसे आप जानते हैं, इनके समय में जो लोग जले, मुम्बई में हुआ और अब यह समझौता एक्सप्रेस में हुआ – यह हम लोगों के लिए चुनौती है, जो आतंकवादी घटनाएं घटती हैं, जो प्रतिवेदित हुआ है। हम देशवासियों को यह आश्वासन देना चाहते हैं कि हमारी संरक्षा पर कोई भी कोताही हम नहीं उठा रखेंगे। संरक्षा हमारे लिए प्राथमिकता है, ताकि निर्भय होकर, निडर होकर लोग जाएं। आज गरीब लोग स्वाभिमान के साथ महसूस कर रहे हैं कि आम आदमी को ध्यान में रखकर हमने बजट बनाया है और यह जो गरीब रथ हमने चलाया है।

महोदय, बहुत सारे हमारे माननीय सदस्यों ने कहा, जैसे हिमाचल प्रदेश की बात कही गई, पहाड़ों की बात की गई, आप देखेंगे, भाषण में हमने उल्लेख किया है कि पूरे ईस्ट में, असम से

लेकर पूर्वांचल की जो हमारी Seven Sisters स्टेट्स हैं, वहां पर हमने ज्यादा से ज्यादा बोगी व्हील्स देकर ज्यादा राशि हमने दी है। यही नहीं महोदय, अपने पड़ौसी देशों से भी संबंध सुधारने में रेल का योगदान पहले भी था और आज भी है। मैं आपको यह भी बताना चाहूंगा कि बंगला देश और कोलकाता के बीच रेल चलाने के लिए हमारा उनके साथ समझौता हो चुका है। हम अप्रैल माह से कोलकाता टू ढाका रेल चलाने जा रहे हैं, ताकि जो हमारा पड़ौसी देश बंगला देश है, वह भी हमारे साथ जुड़े और लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करें। हमने अपने पड़ौसी देश पाकिस्तान में भी रेल चलाई है। पाकिस्तान और हमारे देश के बीच चलने वाली रेल लाइन पर जो घास-पात और खरपतवार जमी हुई थी, हमने उसको हटाकर, पुन: रेल लाइन को चालू किया है। महोदय, कई लोगों को जानकारी न होने की वजह से गलतफहमी में होते हैं, कई लोग बोलते हैं कि बीजेपी के कुछ माननीय सांसदों ने आरोप लगाया कि सार्वजनिक निजी भागीदारी योजना के तहत बजट होटल का निर्माण एवम् यात्री बीमा योजना इत्यादि को निजी हाथों में सौंपा जा रहा है। महोदय, मैं इस संबंध में सम्मानित सदस्यों को बताना चाहता हूं कि इंडियन रेलवे कैटरिंग एवं टूरिज्म कारपोरेशन का गठन एनडीए सरकार के द्वारा 1999 में हुआ था। इस निगम के गठन के समय में ही एनडीए सरकार ने यह निर्णय लिया था कि बजट होटल का निर्माण सरकारी पैसे से नहीं, बल्कि सार्वजनिक निजी भागीदारी योजना के अंतर्गत किया जाएगा। एनडीए सरकार ने यह भी निर्णय लिया था कैटरिंग कारपोरेशन द्वारा यात्री सुविधा से जुड़े अन्य कार्यों का रिटायरिंग रूम, यात्री निवास इत्यादि।

(श्री उपसभापति पीठासीन हुए)

को भी निजी पार्टियों के साथ सार्वजनिक निजी भागीदारी के तहत चलाया जाएगा। महोदय, मैं यह साफ-साफ बताना चाहता हूं कि हम हमेशा इसके पक्षधर रहे हैं कि हम अपने यहां स्टील तथा और अन्य जो चीज हम अपने देश में बना सकते हैं, बनाएंगे और हम विदेशों पर निर्भर नहीं रहेंगे, इसके लिए हमने बार-बार कहा है कि यह नहीं होना चाहिए, भारतीय रेल को निजी हाथों में नहीं सौंपा जाएगा। यह हमारा कोर सैक्टर है। जैसा कि ये जो छोटे-छोटे हैं जैसे बजट होटल है, या कंटेनर कॉरपोरशन है, इसमें हमें एक्सपोर्ट की डिमांड आ रही है तो इसके लिए हमने कंटेनर सर्विस को एलाऊ किया है। हमारा रेलवे कोर सैक्टर है, इसलिए हम रेल चलाएंगे। जो डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडोर है, हम उसके लिए जो थर्ड रेल लाइन डालने जा रहे हैं, अब अंतिम चरण में है। अब तो इसके लिए एमडी और सदस्यों का नाम सर्च कमेटी में जाना बाकी है। भारतीय रेल का डेडिकेटेड फ्रेट कोरिडोर निकट भविष्य में सपना ही नहीं है, बल्कि यह हमारी सरकार का, हमारे देश के प्रधान मंत्री का और सोनिया जी का संकल्प है कि दुनिया की रेलों में भारतीय रेल को एक नम्बर का बनाना है और हम उस दिशा में जा रहे हैं। बहुत से लोग हमारे ऊपर आरोप लगाते हैं कि हम बिहार को ही देखते हैं, ऐसी बात नहीं है। हमारा बिहार में घुमाकर

ही गाड़ी चलाने का काम नहीं है, केवल लोकलाइजेशन से काम नहीं चलता है, बल्कि पूरे देश को ध्यान में रखकर गाड़ी चलाते हैं। जो गाड़ी बिहार से चलती है, जो आन्ध्र प्रदेश से चलती है, जो चेन्नई से चलती है, इन सभी से पूरे देश को ज्यादा से ज्यादा लाभ होता है। माननीय सोनिया जी की कांस्टीट्यूएंसी उत्तर प्रदेश में जहां हमने कोच का कारखाना दिया, वहीं पर हमने कॉ-आर्डिनेट करने के लिए अपने सबसे बड़े उत्तर प्रदेश राज्य को ज्यादा से ज्यादा गाड़ियां दी हैं। हमने बहुत जगह सेवाओं में विस्तार भी किया है। हमने गरीब रथ आठ जोड़े हैं, राजधानी टू राजधानी। अभी हम इसको ब्रांच लाइन में नहीं ले रहे हैं, हम कोच बनाते जाएंगे ओर हम इसको प्रोवाइड भी करते चले जाएंगें। हमारी इकोनोमी ठीक हुई है तो हर गरीब आदमी एफोर्ड करना चाहता है। एक आदमी 1200 रुपए में जहाज में जा रहा है। भारत का ट्रैफिक बढ़ रहा है और जो हमारी जनसंख्या बढ़ रही है, उसको जहाज कैरी नहीं कर सकता है, उसको तो हमारी रेल ही कैरी कर सकती हैं। हम पूरे देश में फर्स्ट फेज में इसको करेंगे, अब इनके पास तो पैसे नहीं थे, जो सेफ्टी के लिए DRF बनाया था। अब ये बोलते हैं कि यह बीस हजार करोड़ का छलावा है। यह सरप्लस है, सारा खर्चा निकालकर, हम इसमें से डिविडेंड देंगे और हम DRF में जो रि-इन्वेस्टमेंट करेंगे कि इतने पैसे का इन्तजाम किया है। महोदय, यह छलावा नहीं है, ये हाथी के दांत दिखाने के लिए नहीं हैं। यह खाने के लिए है। हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि हम जो बोलते हैं, हाउस में जो घोषणा करते हैं, जो बजट लेकर आते हैं, वह करते हैं। यशवंत बाबू फाइनेंस मिनिस्टर रहे हैं, आपको जानकारी होगी कि जो बजट आता है, उसमें बहुत से लोग कुछ और बात बोल देते हैं। वह उनको नहीं बोली चाहिए। जो कर सकते हैं, वही करना चाहिए। आज भारतीय रेल के बजट के साथ-साथ हम आउटकम बजट भी लाए हैं। हमारा क्या आउटकम रहा, उसके सारे कागज हमने बांट दिए हैं। आप लोगों को उसे पढ़ना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह टेबल पर बंधे का बंधा ही रह जाए। जब बंधा रह जाएगा तो क्या होगा। वेंकैया नायडु जी के प्रति हमारा बहुत आदर है। ये अच्छे आदमी हैं। हमने कोई राज खोलने की बात नहीं कही है। राज में बहुत बात होती है। राज का मतलब राज ही होता है, इसलिए आपने जो सोचा होगा कि हमने आपके विषय में क्या कह दिया, यह सब पूंछ खोलने वाला नहीं है। पुंछैया ही नहीं है तो खोलना क्या। ...(व्यवधान)...

श्री एम॰ वेंकैया नायडु: पूंछ ही नहीं है तो खोलना क्या।

श्री लालू प्रसाद: आप एक पार्टी के जिम्मेदार प्रेसिडेंट रहे हैं। जब आप बोलते है। जो हम आपकी बात सुनते हैं। रांची से कराची तक, कराची से रांची तक चले जाते हैं। अच्छी बात है। हमारा आपके ऊपर कोई आरोप नहीं है, न ही कोई काम का आरोप रहता है। हम काम कर रहे हैं। हम इसीलिए पूछ रहे हैं, आप वह फाउंडेशन बताइए। आप एन॰डी॰ए॰ का बोलते हैं। उसी पर चढ़कर हम चढ़ रहे हैं। हम रेल का टियर वेट कम करने जा रहे हैं। महोदय, एक-एक

किलोमीटर की जो गुड्स ट्रेन हैं, अगर देखा जाए तो जितना बोगी का वजन है, हर डिब्बे का वजन है, यदि हर एक का वजन देखा जाए तो empty गाड़ी को खींचने के लिए सारा फ्यूल और पावर कंज्यूम खाली करना है। फिर माल का लादान कैसे होगा, हमारी कमाई कैसे होगी? हम आगे कैसे बढ़ाएंगे? आप उदाहरण देते हैं। आप कहते हैं कि चीन में कोच का टियर वेट कम है। हमारी गुड्स ट्रेन का जो कोच है,उसमे हम टियर वेट को घटाने जा रहे हैं। हमने एडवरटाइज किया है। हम उसको चार टन कम करने जा रहे हैं। हम रीडिजाइन करवा रहे हैं। रीडिजाइन करने से जब एक डिब्बे का चार टन कम होगा तो एक किलोमीटर लाइन, जो गुड्स ट्रन की होती है, आप समझिए कि कितना वजन कम हो जाएगा, तो उतना माल लादेंगे। महोदय, यह जो piecemeal माल है, हमारा जो ट्रांसपोर्ट है, माननीय सदस्यों ने जिसके प्रति चिंता जताई है, तो हम वेयर हाउसिंग बनाने जा रहे हैं। वेयर हाउसिंग के द्वारा ही नहीं, डेडिकेटिड फ्रेट कोरिडोर पर piecemeal माल, जो ट्रकों से जा रहा है, उस माल को हम लेना चाहते हैं। अभी हमने सीमेंट के मामले में, आयरन ओर के मामले में, कोल के मामले में कहा है। एफ॰सी॰आई॰ को करना चाहिए, फूड डिपार्टमेंट को इसका लाभ उठाना चाहिए। Empty-flow direction में जो गाड़ी जाती है, जैसे गाड़ी बिहार जा रही है, वहां से झारखंड में जा रही है, वहां से मिनरल आता है, फिर गाड़ी खाली जा रही है, इसके लिए हमने फूड डिपार्टमेंट से आग्रह किया है कि अभी प्रॉक्योरमेंट कीजिएगा। गेहूं को उत्तर प्रदेश से, अन्य राज्यों से या पंजाब से तो हम तैंतालीस प्रतिशत तक की छूट देंगे। आप बांधकर ले चलिए। नजदीक तक पहले एफ॰सी॰आई॰ में राशन को पहुंचाइए। हमें क्यों बाहर निर्भर रहना पड़ेगा? सिर्फ वही नहीं, महंगाई पर तमाचा मारने की बात भी हम करते हैं। डीजल और पेट्रोल, इतना महंगा है, तभी हमने भाड़ा नहीं बढ़ाया है। बल्कि इसके भाड़े में हमने पांच प्रतिशत की कमी कर दी है। जो डोमेस्टिक इंडस्ट्री है, आयरन ओर, बाक्साइट, लाइम स्टोन है, उसमें भी हमने छह प्रतिशत की कमी कर दी है ताकि उसका बाजार पर बुरा असर न पड़े। यह जो कदम है, उसी के संदर्भ में मुंबई में, जो एक भीड़-भाड़ वाला इलाका है, उसमें हम एक लाइन सेपरेट करने जा रहे हैं। हमने काफी पैसा दिया है, क्योंकि यह हमारी प्राइम सिटी है, देश का ट्रेड सेंटर है। piecemeal में हम कई शहरों को, जो बिग शहर हैं, फास्ट ट्रेन चलाने के लिए फिजिबिलिटी रिपोर्ट ले रहे हैं। हमने वर्ल्ड क्लास स्टेशन की बात कही है। हमने कृषि रिटेल चेन की बात कही है। यह अंतिम चरण में है। अगर देश के किसान की जेब गरम नहीं होगी, उसको मार्केट नहीं मिलेगी, तो फिर हमारा देश आगे कैसे बढ़ेगा। हम लोग उस दिशा में काम कर रहे हैं। ये लोग निजी हाथों को सौंपने की ओर चल पड़े थे, यह बात राकेश मोहन कमेटी मे आई थी, लेकिन जमाना बदला, UPA सरकार आई और आज कंधे से कंधा मिलाकर सब लोग काम कर रहे हैं। रेलवे के अधिकारियों और कर्मचारियों को मालूम हो गया है कि हमारी नौकरी सुरक्षित है। केवल नौकरी ही सुरक्षित नहीं है, हमने बोर्ड को centralise नहीं किया, बल्कि अपनी पावर का विकेन्द्रीकरण किया। एक-एक सौ करोड़ रुपए के सिविल

वर्क के काम के लिए अब जनरल मैनेजरों को रेलवे बोर्ड के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे, हमने सबको जोन में दे दिया है, ताकि उन्हें यहां न आना पड़े और वे काम कर सकें। हम 2,000 रेल लाइनें बना चुके हैं, आगे हम और नयी रेल लाइनें बनाने जा रहे हैं। यह जो legacy and liability हम carry कर रहे थे, देश में ऐसी बहुत सी रेलवे लाइनें sanctioned हैं, जिन पर माननीय सदस्यों को चिंता होती है। Political considerations के आधार पर लाइनें तो sanction हो जाती हैं, लेकिन उनके लिए पैसा नहीं है, इसको भी हम कम कर रहे हैं। बहुत सी राज्य सरकारों ने हमको पैसा दिया, जो बहुत जरूरी है। हम invite करते हैं कि जो बहुत जरूरी रूट है, आप उसके लिए हमें पैसा दीजिए और dedicated freight corridor पर जो existing line का congestion है, इस pressure को हटाकर हम मालगाड़ी उधर ले जाएंगे, तो हमारी गाड़ी और तेज होगी।

अभी दिल्ली आने में हमको गाजियाबाद से आगे अलीगढ़ में गाड़ियों को रोक देना पड़ता है। फास्ट गाड़ी जो आती है, उसे रुकना पड़ता है क्योंकि लोकल पैसेंजर्स कहते हैं कि पहले हमारी लोकल पैसेंजर गाड़ी को pass करो, नहीं तो वे पत्थर फेंक देते हैं। यह भारतीय रेल तो सबकी संपत्ति है, सबकी property है। हमने कोई भेदभाव नहीं किया। आजादी मिलने के बाद यह पहला अवसर है कि UPA के द्वारा बिहार के साथ इंसाफ हो रहा है। बिहार की बात लोग कहते हैं, लोग कहते हैं कि बिहारी लोग खाओ। बिहारी गरीब आदमी है, लेकिन आज माननीय श्रीमती सोनिया गांधी जी और श्री मनमोहन सिंह जी नेतृत्व में UPA सरकार ने बिहार के साथ न्याय किया है। उन्होंने कहा कि बिहार के विकास के बिना, देश के विकास का नाम लेना बेमानी होगा। इसलिए हमने वहां लोको का कारखाना स्थापित करने का निर्णय किया है। हम लोको, डीजल का कारखाना लगा रहे हैं, मधईपुरा में, छपरा में हम व्हील का कारखाना लगा रहे हैं। अब व्हील हम मंगा रहे हैं विदेश से और हमारी रोजी-रोटी मारी जा रही है, यहां का आदमी क्या करेगा, कहां जाएगा?

हमारे माननीय सदस्य श्री अवनि राय साहब बोल रहे थे कि जिले की चाय-पूरी खत्म करके पिज्जा-पिज्जा कर दिया है। अरे, कितने प्रतिशत आदमी पिज्जा खाते हैं? हम लोगों के घरों में भी हमारे बच्चे अब मडुआ, मकई का रगड़ा, चटनी, माठा, छाछ से कोसों दूर भागकर पिज्जा लाओ कहते हैं। ये पिज्जा युग में पहंचानें वाले लोगों से परहेज करना चाहिए। एक अखबार ने छाप दिया कि लालू यादव ने चतुराई से तरकारी और पूरी का दाम बजट में बढ़ा दिया। कहां लिखा है हमने बजट में? गाड़ी चलते-चलते प्लेटफार्म पर आती है, वहां ए.बी.सी.डी कैटेगरी में कोई आदमी पूरी छान रहा है, गाड़ी खुलने वाली हैं, किसी ने आधा पैसा दिया, किसी ने बेशी दिया, रेजगारी दिया, नोट छोड़ दिए। पूरी-जलेबी अगर बिकती है और अगर गरीब आदमी बेच रहा है और उसे दो पैसे बेशी मिल गए तो यह पैसा अमरीका थोड़े ही जा रहा है, किसी न किसी गरीब के घर में ही जा रहा है। इसको भी हम देखेंगे कि कैसे hygienic करना है। बहुत सी गाड़ियों में pantry cards नहीं हैं। जितना कचरा था, जितनी legacy थी, इसको साफ करते

करते हम 3 सालों में आप सबके सहयोग से और हमारे रेलकर्मियों के सहयोग से, रेलवे को आज उंचाई की ओर ले जा रहे हैं और जो एक प्रतिशत बच गया है, उसे ठीक करके हम 100 परसेंट पर पहुंचकर दुनिया को बता देंगे कि भारत में हमारा हुनर है, हमारा स्किल है। रेलवे में टेलेंट की कमी नहीं है, अफसरों की कमी नहीं है, ईमानदारों की कमी नहीं है। इतने बड़े सिस्टम को चलाना साधारण काम नहीं है। हम electrification कर रहे हैं, हम अपने सिगनल सिस्टम को ठीक कर रहे हैं, हम ब्रिजों को ठीक कर रहे हैं, ब्रिजों को ठीक करने में बहुत जगह caution लगा रहता है, जहां विलंब हो जाता है। समय सीमा के अन्दर ब्रिज बना कर हम इस बात को आगे बढ़ा रहे हैं। भारतीय रेल में आज गरीब आदमी के लिए एक रुपया ही कम नहीं हुआ है, अगर तीन स्टेशन जाएगा, तो 10 प्रतिशत हो जाएगा, चौथे स्टेशन से 20 प्रतिशत हो जाएगा। यह भाड़ा कोई भाड़ा नहीं है, लेकिन भाड़ा कम करने पर भी हमको पैसेंजर ट्रैफिक से आमदनी आई है। भारतीय रेल में इसके पूरे ढांचे में आप सबका सहयोग है। आप लागों से हम और सहयोग चाहते हैं और हमको इसको आगे बढ़ाना है।

महोदय, हमारी माननीया सुषमा जी ने 4-5 बिन्दु उठाया था, बाकी तो सारा रेलवे के बजट भाषण में है, उसको देख लिया जाएगा। एक ही बात को बार-बार दोहराने से कोई फायदा नहीं है। पहले ही से सारी बातें air में चली गई। यहां थोड़ा लेट हो गया। ...(व्यवधान)...

श्री यशवंत सिन्हा: सोनिया जी वाला दोहराते रहिए।

श्री लालू प्रसाद: सोनिया जी जैसी नेता ...(व्यवधान)... सोनिया जी ने देश से कुछ लिया नहीं है, देश को दिया है ...(व्यवधान)... हमारी सम्मानित सुषमा जी, जो पहले हम लोगों की ही पार्टी में थी, सोशलिस्ट विचारधारा, समाजवाद, लोहिया जी, सारे लोगों के साथ ...(व्यवधान)... अभी भी ...(व्यवधान)... आप अभी नए आए हैं। इनका पूरा इतिहास जानिए, वे सोशलिस्ट हैं, सोशलिस्ट ...(व्यवधान)... स्वराज भाई भी सोशलिस्ट, वे भी सोशलिस्ट ...(व्यवधान)... इसका मतलब यह नहीं कि ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: पाणि जी, आप बैठिए ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: आप भी सोशलिस्ट हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैंने सवाल पूछा है, इतिहास नहीं पूछा है। मेरे सवालों का जवाब दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: आप भी सोशलिस्ट, जो आप बोल रहे हैं ...(व्यवधान)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: हम आरएसएस के हैं।

श्री लालू प्रसाद: आरएसएस के हैं, अब पता लग रहा है कि गलती से आपको सोशलिस्ट कहा गया है ...(व्यवधान)... हम लोगों ने सुषमा जी को इनकी लंका में आग लगाने के लिए भेजा है. ..(व्यवधान)... पहले तत्काल सेवा गाड़ी प्रारंभ होने के पहले ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैंने जो सवाल पूछे हैं, उनका जवाब दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: यह preamble है पहले तत्काल सेवा गाड़ी प्रारंभ होने के स्टेशन से अंतिम स्टेशन के बीच थी। अब रूट के बीच महत्वपूर्ण स्टेशनों के यात्री भी उसी स्टेशन से टिकट लेकर तत्काल सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। यह सत्य नहीं है कि तत्काल सेवा केवल यात्रा के आरंभ से अंत तक ही उपलब्ध है। पहले तत्काल कोटा 10 प्रतिशत था, जिससे पैसेंजर्स की मांग पूरी नहीं होती थी। अंतिम दिन यात्रा करने वाले पैसेंजर्स की संख्या अधिक थी। उससे ट्रैवल एजेंट 500 से 1000 रुपया प्रति व्यक्ति bluff कर देता था, उसको देना पड़ता था। रेलवे ट्रैवल एजेंट पहले से सारे टिकट बुक करा कर अंतिम दिन नाम बदल कर उसे बचते थे। उसी से बचने के लिए तत्काल कोटा बढ़ाया गया। तत्काल का चार्ज non-peak समय से स्लीपर और एसी चेयर के लिए 75 रुपया है, peak समय में यह चार्ज 150 रुपया है। तत्काल कोटा सामान्य 30 प्रतिशत नहीं है, यह आवश्यकता अनुसार, फिर भी आपने इस सवाल को उठाया है, हम इसको देख लेंगे। देख कर ठीक है, तो ठीक है, नहीं तो नहीं। हम इसको देख लेंगे। ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: इसका मतलब है कि जो मैंने बोला है, वह ठीक है। बाकी चीजों के ऊपर बोलिए। बाकी चीजें, जैसे cancellation charges बढ़ाया, return ticket पर बढ़ाया। मैंने 6 चीजें गिनाई हैं।

श्री लालू प्रसाद: एक चीज और कुछ माननीय सदस्यों ने उठाई और कुछ लोगों को भ्रम हो गया है कि ऑल टूरिस्ट पिलग्रिम के ऊपर चार्ज बढ़ा दिया है। जो टूरिस्ट जाते हैं, उनके बारे में यह हमको कहा गया। हम भारत दर्शन ट्रेन चलाते हैं। हम सारे तीर्थ यात्रा करने वालों को importance देते हैं। हम सारे टूरिज्म को जोड़ते हैं और उस में हम ने ज्यादा सुविधाएं दी हुई हैं। हम उस गाड़ी को चलवा रहे हैं, आम लोग उस में जाएंगे। महोदय, उसमें नाश्ता-चाय फ्री देते हैं, भोजन दिन का फ्री देते हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज: आप सीधे कह दीजिए कि आप ने वृद्धि की और आप वृद्धि को मानते हैं। आप की बात से यह निकला कि आप वृद्धि को उचित मानते हैं।

श्री लालू प्रसाद: हम बता रहे हैं आप सुन लिजिए। हमारी भारत यात्रा चलती है और ये कौन लोग हैं, वह मैं बताता हूं। वे हैं ऑल इंडिया यात्रा आर्गनाइजेशन, पिलग्रिमिस्ट्स वैलफेयर एसोसिएशन। इन्होंने हम को चिट्ठी में बधाई भी दी है। इनका नाम है जे॰पी॰ बत्रा, चेयरमैन-एक्सऑफिसियो,

प्रिंसिपल सेक्रेटरी रेलवे बोर्ड को लिखा है। बादेव जी को लिखा है, इनका नाम है वाइस-प्रेसीडेंट रमेश कुमार चतुर्वेदी, राजस्थान। वह देश के यात्रियों के लिए वैलफेयर का काम कर रहे हैं। महोदय, आप इसमें रेल के 13 कोच रिजर्व कराते हैं इसे पॉलिटिकल पार्टीज के लोग कराते हैं जैसे मायावती जी ने कराए, राम विलास जी ने कराए, हम लोगों ने भी कराए, बी॰जे॰पी॰ के लोगों ने भी कराएं हैं। महोदय, हमने इस में कहीं भेदभाव नहीं किया है। मुरली मनोहर जोशी जी ने कराए। महोदय, दूसरे पेज पर इसके प्रेसीडेंट का नाम है, उसमें भी हमने concession करके दिए हैं। तो एक तो हम चलाते हैं और दूसरी 13 कोच की गाड़ी है। महोदय, इसमें हुआ यह है कि ये लोग ले लेते हैं और फिर आप आदमी से कांटैक्ट करके चाहे जो लेते हैं, चाहे जो चार्ज करते हों, वे उन्हें घुमाते हैं। महोदय, 13 कोच की ट्रेन दी तो उसके हर डिब्बे की स्ट्रैन्थ का पैसा देना पड़ेगा। जाने का देना पड़ेगा, फिर आने का, हाल्ट किया तो उसका देना पड़ेगा, detain किया तो देना पड़ेगा। महोदय, हम कई गाड़ियों से नोंचकर डिब्बे बनाते हैं और देते हैं। अब पैंट्री कार लेनी है तो उसका दाम आपको देना पड़ेगा। महोदय, ये नियम पहले से हैं, हमने नहीं बनाए हैं, सब का सामान लादना है तो उसका अलग चार्ज देना पड़ेगा और जितने दिन की देरी करिएगा, उसका चार्ज देना पड़ेगा। आप कम-से-कम मैं जाइए, पैंट्री कार का मत दीजिए, आप जाइए और डिटेंशन मत कीजिए। महोदय, डिटेंशन को रोकने के लिए बात इस में उठायी गयी है, फिर भी अगर इससे कोई हार्डशिप होगी तो उसे हम देखेंगे। ये तो रिलीजियस माइंड के लोग हैं और हम तो चाहते हैं लोग ज्यादा-से-ज्यादा घूमते रहें ताकि सोचने का मौका नहीं मिले।

महोदय, यह आरोप लगाया गया कि बिहार को ज्यादा दिया है। अब अगर बिहार तरक्की करेगा तो यह भी अच्छी बात है और बिहार आप को सब जगह तरक्की करवा रहा है। हम सब जगह दौलत पैदा करवा रहे हैं। महोदय, आज हर घर में भोजन बनाते हैं, हर आदमी की हजामत बनाते हैं, हर आदमी के घर दूध पहुंचाते हैं, हर आदमी के घर पर केतारी पेरकर उसे गिलास में पिलाते हैं। महोदय, हमारे बिहार के लोग देश में ही नहीं, सूरीनाम, मॉरीसस और दुनियाभर में, जैसे मारवाड़ी भाई हैं, उसी तरह से बिहारी भाई हैं।

महोदय, नायडु साहब ने कहा कि भेदभाव हो गया। अरे भाई, क्या भेदभाव हुआ? आप शुरू से देख लिजिए, आप एक साल का एवरेज देख लें-एन॰डी॰ए॰ वर्स यू॰पी॰ए॰। महोदय, हम जो पैसा दे रहे हैं, क्या बांधकर ले जाएंगे रुपया? हम जाकर चिदम्बरम जी के खजाने में जमा कर देंगे। महोदय, पहले आंध्र प्रदेश के लिए एवरेज था 259 करोड़ और अभी हमने दिया 640 करोड़। महोदय, बिहार के लिए पहले, जब नीतीश जी थे, 250 करोड़ था और हमने किया 1251। हम ने यह किया क्योंकि बिहार में कुछ था ही नहीं। उन्होंने अन्याय किया था, इंसाफ नहीं किया था।

गुजरात में पहले से 178 था और इस बात हमने 322 किया। कर्नाटक में पहले 162 था, तो हमने कर्नाटक में एक साल में खर्च करने के लिए 630 किया। केरल में पहले 158 था, हमने उसे 283 किया। मध्य प्रदेश में 158 था ...(व्यवधान)...

श्री एम॰ वेंकैया नायडु: सर, एक मिनट ...(व्यवधान)... केरल के बारे में ...(व्यवधान)... आप स्पष्टीकरण देने के लिए तैयार हैं, तो ठीक है ...(व्यवधान)... आप केरल के बारे में जो फिगर कोट कर रहे हैं, तो मेरे पास जो जानकारी है, उसके अनुसार 2002 में केरल में 169 करोड़। हमारे पास दो साल के फिगर्स हैं।

श्री लालू प्रसाद: हम तो एवरेज बोल रहे हैं।...(व्यवधान)... अच्छा, दोनों में डिफरेंस हो रहा है, तो हम लोग बाहर में करेक्ट कर देंगे।...(व्यवधान)...

श्री एम॰ वेंकैया नायडु: केरल के साथ अन्याय हुआ है।...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: मध्य प्रदेश में पहले 158 था, तो हमने 328 किया। महाराष्ट्र में 374 था, तो हमने 1048 किया। जहां सबसे ज्यादा रुपया है और पहली पंक्ति का राज्य है, उसके साथ भी हमने अन्याय नहीं किया। उड़ीसा में 239 था, वहां हमने 764 दिया हैं राजस्थान में 108 था। राजस्थान की बात कही गई थी। चतुर्वेदी जी थे और मिश्रा जी भी थे। राजस्थान में 108 ही मिलता था आप लोगों को, जब आप लोगों का राज था और देखिए, हमने बढ़ा कर 673 किया। तमिलनाडु में 210 ही था, इतने लड़ाका नेता लोग वहां थे और वहां पर हमने 726 किया है। वहीं नहीं, आप पैसा खर्च करवाइए और जहां भी प्रोजेक्ट में कमी आएगी, वहां पैसा देने का मैं आश्वासन देता हूं। ...(व्यवधान)... लेकिन यह काम टाइम पर होना चाहिए। होता क्या है कि ...(व्यवधान)...

श्री श्रीगोपाल व्यास (छत्तीसगढ़): झारखंड और छत्तीसगढ़ का? ...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: झारखंड का तो अलग फिगर है, वह हम दे देंगे।...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: दे देंगे, दे देंगे।...(व्यवधान)...

श्री लालू प्रसाद: मूलत: उधर की चर्चा की गई थी, इसलिए हम लोग इसको लेते आए थे। इसलिए भारतीय रेल में कई जगह, यहां पर यवतमाल में था कि महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री ने लिखा है कि हम 40 प्रतिशत अर्थ पर स्टेट कंट्रीब्यूशन करा देंगे। यवतमाल से, औरंगाबाद का, जहां आत्महत्याएं हुई हैं ...(व्यवधान)... विजय दर्डा जी का था। वहां के मुख्य मंत्री जी से भी हमारी बात हुई थी। चिट्ठी लिखी, कहा गया कि वहां पर बहुत जरूरी है। आत्महत्या क्यों हो रही है? तो मान लीजिए हमें वहां पर पानी ही पहुंचाना है, बहुत काम है, उधर विकास नहीं हो पाता है, वहां लोग आत्महत्याएं करते हैं, फूड ग्रेन हमें पहुंचाना है, तो हम लोग उस लाइन का काम करने जा रहे हैं। साथ ही श्री सुरेश पचौरी जी ने यह आग्रह किया है कि होशंगाबाद, करेली, पिपरिया में अंडर

ब्रिज का निर्माण हो। इस पर शीघ्र कार्रवाई होगी। इस पर जल्दी कार्रवाई करके अंडरग्राउंड जल्दी खुदवा कर हम सब बनवा देंगे। वहां पर सब काम हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी मांग के अनुसार कोलकाता मेल का स्टॉपेज करेली में होगा।

आप लोगों के और भी जो सुझाव हैं, इस पक्ष में हों या उस पक्ष के, हमारा हृदय साफ है। हम साफ-साफ बात करते हैं, हमारे पेट में दांत नहीं हैं, जो भी दांत हैं वे बाहर दांत हैं। इसलिए हम कहीं भी भेदभाव नहीं करने वाले हैं। यह रेल जब हमारा ...(व्यवधान)... स्टॉपेज भी इसमें है ...(व्यवधान)... आप जो-जो ट्रेन बोलिएगा इटारसी से, कौन-कौन सी ट्रेन ...(व्यवधान)... हों, कोलकाता मेल का स्टॉपेज करेली में कर देना है। करेली सब्जी वाला तो नही न? ...(व्यवधान)... यह तो कभी भी हो जाएगा।

इसलिए हम आपके सारे सुझावों को फिर इनवाइट करते हैं कि हमें सुझाव जरूर दीजिएगा। हमारीखामियां हो सकती हैं, त्रुटि हो सकती है और ...(व्यवधान)...

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN (Kerala): Sir, we have raised one issue relating to the Salem Division. What is your response? That is a very important issue.

SHRI LALU PRASAD: You are talking about Kerala and Tamil Nadu.

SHRI A. VIJAYARAGHAVAN: It is very seriosu issue.

SHRI LALU PRASAD: You are taking about Salem and Palakkad Divisions. सर, हमने तमिलनाडु में एक सेलम डिवीजन बनाने की घोषणा की। पालघाट इनके यहां हैं। इसमें लोगों के मन में कोई डिफरेंस, कोई आशंका है। इसलिए दोनों पार्टियों के सभी माननीय सांसद, दोनों पक्षों के, हमारे पास आए थे। हमने उचित समझा कि देश के सभी राज्यों के भाई बराबर-बराबर हैं। फिर आप दोनों तो पड़ौसी हैं, इसलिए कोई झगड़ा-झंझट नहीं हो। इसलिए दोनों राज्यों के आदरणीय, रिस्पेक्टेड श्री करुणानिधि जी और श्री अच्युतानन्द जी से भी मैंने फोन पर बात करके, चिट्ठी लिखकर कहा कि दोनों मुख्य मंत्री बैठकर छोटी-छोटी बातों को, यह प्रोजेक्ट इधर चला गया या वह प्रोजेक्ट उधर चला गया, सार्टआउट कर दीजिए, दोनों तय कर दीजिए कि क्या-क्या ज्युरिडिक्शंस किधर-किधर क्या-क्या रहेगा, उसकों हम कद देंगे। इसलिए आप लोगों से, दोनों राज्यों के लोगों से अपील है कि सेंटिमेंट्स की आग में न बहें। उसकों हम देखेंगे।

SHRI K. CHANDRAN PILLAI (Kerala): The MoS is repeatedly saying.....

MR. CHAIRMAN: You forget about that. The Minister has given an assurance that the two Chief Ministers would decide .....(*Interruptions*)

SHRI K. CHANDRAN PILLAI: The MoS is repeatedly saying that there is no more discussion on it ...(*Interruptions*)... He has given a reply in the House ...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Minister has given a reply in the House ...(*Interruptions*)

श्री अजय मारु (झारखंड): झारखंड के बारे में मैंने कहा था।

श्री लालू प्रसाद: झारखंड के मुख्यमंत्री, श्री कौड़ा जी से बात हुई है और हजारी बाग होकर जाने वाली जो रेल लाइन है और CPI के जो नेता है और यशवंत बाबू भी बोलते रहते हैं, उसको भी हम बहुत जल्दी, समय-सीमा के अंदर ...(व्यवधान)

श्री यशवतं सिन्हा: लालू जी, मैं आपको सूचना दे दें कि उसका काम रुक गया है। पुल जो बन रहा था, उसका ठेकेदार भाग गया है। लोग ट्रक लगाकर वहां से लोहे की छड़ काट-काट कर ले गए हैं। काम आगे बढ़ने की बजाए पीछे की तरफ जा रहा है।

श्री लालू प्रसाद: मैं इसको दिखवा लेता हूं।

श्री यशवंत सिन्हा: जी, दिखवा लीजिए।

श्री लालू प्रसाद: इसलिए, महोदय, सारे सुझावों को मैं गृहण करता हूं और आश्वस्त करता हूं कि सब पर समय-सीमा के अंदर हम कार्यवाही करेंगे और सारे रीज़न्स को और सैगमेंट्स को ध्यान में रखकर भारतीय रेल को ऊंचाई पर पहुंचाने का हमारा संकल्प है। आप लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद। ....(व्यवधान)

श्री उपसभापति: वे पूरी शिकायतें देखेंगे। ...(व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद: रेलवे कन्वेंशन कमिटी की अनुशंसा को लागू करने संबंधी प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति दें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY (Andhra Pradesh): Sir, the Andhra Pradesh Assembly has passed a Resolution ...(*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: His reply is not satisfactory. We are not here to quareel ...(*Interruptions*) We have raised a number of issues like, electrification, track conversion, allocation to various States ...(*Interruptions*) Also, Sir, one lakh and fifty eight thousand posts are vacant. There should be some response from the Minister.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has given an assurance that he would look into all the issues.

I shall now put the Resolution moved by Shri Lalu Prasad to vote. The question is:

> That this House approves the recommendations contained in Paras 45, 46, 47, 48, 49, 50 and 51 of the Fifth Report of the Railway Convention Committee (2004) appointed to review the rate of dividend payable by the Railway Undertaking to General Revenues etc., which was laid on the Table of the Rajya Sabha on the 18th August, 2006, with modification to Para 50 that appropriation of the principle component of the lease charges to the Capital Fund would be made through Major head 3006 instead of Major Head 2001."

The motion was adopted.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the Minister to move the Bills.

GOVERNMENT BILLS

The Appropriation (Railways) Vote on Account Bill, 2007 and The Appropriation (Railways) Bill, 2007

श्री लालू प्रसाद: महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि:–

> "रेलों के प्रयोजनार्थ वित्तीय वर्ष 2007-2008 के एक भाग की सेवाओं के लिए भारत की संचित निधि में से कतिपय राशियां निकालने का उपबंध करने वाले विधेयक पर , लोक सभा द्वारा पारित रूप में, विचार किया जाए।"

महोदय, मैं यह भी प्रस्ताव करता हूं कि:–

> "रेलों के प्रयोजनार्थ वित्तीय वर्ष 2006-2007 की सेवाओं के लिए भारत की संचित निधि में से कतिपय और राशियों के संदाय और विनियोग को प्राधिकृत करने वाले विधेयक पर, लोक सभा द्वारा पारित रूप में, विचार किया जाए।"

The questions were proposed.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We shall now take up the Appropriation (Railways) Vote on Account Bill, 2007.